Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में भारत की विश्व को देन

Dr. Vivek Kumar*

Professor & Head, Swami Vivekananda Chair Central University, Jammu

सार – अपने ओजस्वी वाणी से भारत की महिमा को विश्वपटल पर आलोकित करनेवाले स्वामी विवेकानन्द का सन्देश समूची मानवता की अनमोल धरोहर है। दुनियाभर के महान ज्ञानी,विज्ञानी, चिंतकों, कलाकारों और विशेषकर युवाओं के हृदय को स्वामीजी के शक्तिदायी विचार आंदोलित करते रहे हैं। फिर भी आज भारत सहित विश्व के बहुसंख्यक लोग स्वामीजी के संदेशों से अवगत नहीं हैं।

----------X----------

11 सितम्बर, 1893 को अमेरिका के शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन के पहले दिन स्वामी विवेकानन्द ने अपने सात मिनट के छोटे से व्याख्यान से दुनिया को जीत लिया। "मेरे अमेरिका के बहनों और भाइयों..." कहकर उन्होंने अपना उद्‌बोधन प्रारंभ किया। स्वामीजी के इस प्रसिद्ध एवं प्रथम उदबोधन का यह प्रथम वाक्य, जिसने वहां के श्रोताओं के हृदय में मानों एक अदभुत विद्‌युत तरंगों को प्रवाहित कर दिया। यह केवल उद्‌बोधन की मात्र एक शैली नहीं थी, अपितु स्वामीजी के उन शब्दों में भारत की महान आध्यात्मिक शक्तियां ही मुखरित हुईं। अपने इस भाषण में स्वामीजी ने कहा कि, "मुझे ऐसे देश का धर्मावलम्बी होने का गौरव है, जिसने संसार को 'सहिष्णुता' तथा 'सभी धर्मों को मान्यता प्रदान' करने की शिक्षा दी है। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी की समस्त पीड़ित और शरणागत जातियों तथा विभिन्न धर्मों के बहिष्कृत मतावलम्बियों को आश्रय दिया है।

पहली बार स्वामी विवेकानन्द के रूप में पश्चिमात्य श्रोता समाज ने विश्वबंधुत्व का संदेश उचित समय पर सही परिप्रेक्ष्य में समझा। इसलिए विवेकानन्द केंद्र के संस्थापक श्री एकनाथजी रानडे यह चाहते थे कि यह दिन 'विश्वबंधुत्व दिन' के रूप में मनाया जाए। केवल बाहरी एकता से समाज में विश्वबंधुत्व नहीं जागेगा, बल्कि अधिक कलह और विनाश ही होगा। विविध मतों में एकात्मता और अन्य मतों का भी स्वीकार करने से ही विश्वबंधुता प्रस्थापित होगा। बनावटी एकता अपने व्यक्तित्व और परम्परागत मूल्यों को नष्ट करती है। किन्तु एकात्मता विविध समुदायों की विशेषताओं को बनाए रखते हुए बंधुत्व के सूत्र में बांधती है। इसलिए इस दिन का संदेश उनके लिए भी है जो हठधर्मी है और मतांतरण के माध्यम से विविध जनजाति समुदायों की मान्यताओं और संस्कृति को करते हैं।

स्वामी विवेकानन्दजी ने विश्वपटल पर जहां भारत को गौरवान्वित किया, वहीं उन्होंने भारत आकर भारतीय जनमानस को झंझोर कर जगाया। इतना ही नहीं उन्होंने भारत में विद्‌यमान सभी मत-सम्प्रदायों और जातियों में व्याप्त दोषों से जनसामान्य को अवगत कराया और बताया कि मैं उस धर्म में विश्वास नहीं करता जो किसी भूखे को रोटी न दे सके। उनका स्पष्ट कहना था कि देश की गरीबी, अज्ञानता, विषमता और नारी समाज की उन्नति के बिना भारत का उत्थान संभव नहीं है।

आज जब हम स्वामी विवेकानन्दजी के विचारों का अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि स्वामीजी एक संन्यासी होने के बावजूद देश की वास्तविक स्थिति पर सूक्ष्म दृष्टि रखते थे। अध्यात्म को व्यावहारिक जीवन में प्रगट करने पर वे विशेष जोर देते थे। उन्होंने कहा भी कि, "त्याग और सेवा ही भारत का राष्ट्रीय आदर्श है।" बिना त्याग और सेवा के देश का उत्थान नहीं हो सकता। इसलिए आज की आवश्यकता है कि हम हमारे देशवासियों को इससे अवगत कराएं ताकि सब लोग अपने व्यक्तिगत जीवन में त्याग और सेवा को चरितार्थ कर सकें। इस विश्वबंधुत्व दिन के उपलक्ष्य में हमें विश्वधर्म महासभा में स्वामी विवेकानन्दजी द्‌वारा दिए गए संदेश का स्वाध्याय करना चाहिए। केवल प्रथम दिवस के सुप्रसिद्ध व्याख्यान का ही नहीं अपितु 'हिन्दू धर्म पर निबंध' का भी अध्ययन आवश्यक है, और उसके अनुसार कार्य करने में ही 'विश्व बन्धुत्व दिन' की स्मृति की सार्थकता है।

www.ignited.in

काल के भाल पर कुंकुम उकेरने वाले सिद्धपुरुष का नाम है, स्वामी विवेकानन्द। नैतिक मूल्यों के विकास एवं युवा चेतना के जागरण हेतु कटिबद्ध, मानवीय मूल्यों के पुनरुत्थान के सजग प्रहरी, अध्यात्म दर्शन और संस्कृति को जीवंतता देने वाली संजीवनी बूटी, भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता के प्रखर प्रवक्ता, युगीन समस्याओं के समाधायक, अध्यात्म और विज्ञान के समन्वयक, वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु हैं स्वामी विवेकानन्द।

विवेकानन्द बड़े स्वप्नदृष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद न रहे। उन्होंने वेदान्त के सिद्धान्तों को इसी रूप में रखा। अध्यात्मवाद बनाम भौतिकवाद के विवाद में पड़े बिना भी यह कहा जा सकता है कि समता के सिद्धान्त का जो आधार उन्होंने दिया उससे सबल बौद्धिक आधार शायद ही ढूँढा जा सके। उन्होंने कहा था कि मुझे बहुत से युवा संन्यासी चाहिये जो भारत के ग्रामों में फैलकर देशवासियों की सेवा में खप जायें। वे पुरोहितवाद, धार्मिक आडम्बरों, कठमुल्लापन और रूढ़ियों के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने धर्म को मनुष्य की सेवा के केन्द्र में रखकर ही आध्यात्मिक चिंतन किया था। उनका हिन्दू धर्म अटपटा, लिजलिजा और वायवीय नहीं था। उन्होंने यह विद्रोही बयान दिया था कि इस देश के तैंतीस करोड़ भूखे, दरिद्र और कुपोषण के शिकार लोगों को देवी-देवताओं की तरह मन्दिरों में स्थापित कर दिया जाये और मन्दिरों से देवी देवताओं की मूर्तियों को हटा दिया जाये। उनका यह कालजयी आह्वान एक बड़ा प्रश्नवाचक चिन्ह खड़ा करता है। उनके इस आह्वान को सुनकर पूरे पुरोहित वर्ग की घिग्घी बँध गई थी। आज कोई दूसरा साधु तो क्या सरकारी मशीनरी भी किसी अवैध मन्दिर की मूर्ति को हटाने का जोखिम नहीं उठा सकती। उनके जीवन की अन्तर्लय यही थी कि वे इस बात से आश्वस्त थे कि धरती की गोद में यदि ऐसा कोई देश है जिसने मनुष्य की हर तरह की बेहतरी के लिए ईमानदार कोशिशें की हैं, तो वह भारत ही है। उनकी दृष्टि में हिन्दू धर्म के सर्वश्रेष्ठ चिन्तकों के विचारों का निचोड़ पूरी दुनिया के लिए अब भी जलन का विषय है। स्वामीजी ने संकेत दिया था कि विदेशों में भौतिक समृद्धि तो है और उसकी भारत को जरूरत भी है लेकिन हमें याचक नहीं बनना चाहिये। हमारे पास उससे ज्यादा बहुत कुछ है जो हम पश्चिम को दे सकते हैं और पश्चिम को उसकी जरूरत है।

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा के सिद्धान्त भारत की शिक्षा के अधूरेपन को दूर करने में सक्षम हैं। वे मैकाले द्वारा प्रतिपादित और उस समय प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के विरोधी थे, क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ बाबुओं की संख्या बढ़ाना था। वह ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। बालक की शिक्षा का उद्देश्य उसको आत्मनिर्भर बनाकर अपने पैरों पर खड़ा करना है। उन्होंने प्रचलित शिक्षा को निषेधात्मक शिक्षा की संज्ञा देते हुए कहा है कि आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षाएं उत्तीर्ण कर ली हों तथा जो अच्छे भाषण दे सकता हो, पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं करती, जो चरित्र निर्माण नहीं करती, जो समाज सेवा की भावना विकसित नहीं करती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ? अतः स्वामीजी सैद्धान्तिक शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, वे व्यावहारिक शिक्षा को व्यक्ति के लिए उपयोगी मानते थे। व्यक्ति की शिक्षा ही उसे भविष्य के लिए तैयार करती है, इसलिए शिक्षा में उन तत्वों का होना आवश्यक है, जो उसके भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हो। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में, तुमको कार्य के सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक बनना पड़ेगा।

विवेकानंद एक सुखी और समृद्ध भारत के निर्माण के लिए बेचैन थे। इसके लिए जातिभेद ही नहीं, उन्होंने हर बुराई पर प्रहार किया। वे समाज में समता के पक्षधर थे और इसके लिए जिम्मेदार लोगों के प्रति उनके मन में गहरा रोष था। उन्होंने कहा- जब तक करोड़ों लोग गरीबी, भुखमरी और अज्ञान का शिकार हो रहे हैं, मैं हर उस व्यक्ति को शोषक मानता हूं, लेकिन उनकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दे रहा है।

स्वामी विवेकानंद के मन में समता के लिए वर्तमान समाजवाद की अवधारणा से भी अधिक आग्रह था। उन्होंने कहा था- 'समता का विचार सभी समाजों का आदर्श रहा है। यह सारी मानवता का आदर्श है। संपूर्ण प्राणिमात्र के विरुद्ध जन्म, जाति, लिंग भेद अथवा किसी भी आधार पर समता के विरुद्ध उठाया गया कोई भी कदम एक भयानक भूल है। और ऐसी किसी भी जाति, राष्ट्र या समाज का अस्तित्व कायम नहीं रह सकता, जो इसके आदर्शों को स्वीकार नहीं कर लेता।'

इससे भी बढ़कर उन्होंने समता के लिए ऐसे प्रखर उद्‌गार व्यक्त किए, जो मानवमात्र के किसी व्याख्याता और अध्येता ने भी नहीं व्यक्त किए होंगे। उन्होंने कहा- 'अज्ञान विषमता और आकांक्षा ही वे तीन बुराइयां हैं, जो मानवता के दु:खों की कारक हैं और इनमें से हर एक बुराई दूसरे की घनिष्ठ मित्र है।'

यह सत्य है कि विवेकानंद राजनीतिक आन्दोलन के पक्ष में नहीं थे. इस पर भी उनकी इच्छा थी कि एक शक्तिशाली, बहादुर और गतिशील राष्ट्र का निर्माण हो. वे धर्म को राष्ट्रीय जीवन रूपी संगीत का स्थायी स्वर मानते थे. हिंगल के समान उनका विचार था कि प्रत्येक राष्ट्र का जीवन किसी एक तत्व की अभिव्यक्ति है. उदाहरण के लिये धर्म भारत के इतिहास का

www.ignited.in

एक प्रमुख निर्धारक तत्व रहा है. स्वामी विवेकानंद के शब्दों में "जिस प्रकार संगीत में एक प्रमुख स्वर होता है, वैसे ही हर राष्ट्र के जीवन में एक प्रधान तत्व होता है. अन्य सभी तत्व इसी में केन्द्रित होते हैं. प्रत्येक राष्ट्र का अपना अन्य सब कुछ गौण है. भारत का तत्व धर्म है. समाज-सुधार तथा अन्य सब कुछ गौण है." अन्य शब्दों में विवेकानंद ने राष्ट्रवाद के धार्मिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया. उनका विशवास था कि धर्म ही भारत के राष्ट्रीय जीवन का प्रमुख आधार बनेगा. उनके विचार में किसी राष्ट्र को गौरवशाली, उसके अतीत की महत्ता की नींव पर ही बनाया जा सकता है. अतीत की उपेक्षा करके राष्ट्र का विकास नहीं किया जा सकता. वे राष्ट्रीयता के अध्यात्मिक पक्ष में विश्वास करते थे उनका विचार था कि भारत में स्थायी राष्ट्रवाद का निर्माण धार्मिकता के आधार पर ही किया जा सकता है.

विवेकानंद का दृढ़ मत था कि आध्यात्मिकता के आधार पर ही भारत का कल्याण हो सकता है. उन्होंने अपने एक व्याख्यान में स्पष्ट शब्दों में कहा था."भारत में विदेशियों को आने दो, शस्त्रबल से जीतने दो, किन्तु हम भारतीय अपनी आध्यात्मिकता से समस्त विश्व को जीत लेंगे. प्रेम, घृणा पर विजय प्राप्त करेगा. हमारी अध्यात्मिक पश्चिम को जीतकर रहेगी ..... उदबुद्ध और सजीव राष्ट्रीय जीवन की शर्त ही यह है कि हम दर्शन और आध्यात्मिकता से विश्व पर विजय प्राप्त करें."

राज दर्शन के क्षेत्र में दूसरा महतवपूर्ण अनुदान उनकी स्वतंत्रता की कल्पना है. अखिल ब्रहमांड में स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये प्रयास किया जा रहा है. स्वतंत्रता अध्यात्मिक प्रगति का मूल है. विवेकानंद के स्वतन्त्रता विषयक सिद्धांत अत्यंत व्यापक थे. उनका मत था की समस्त विश्व अपनी अनवरत गति के माध्यम से मुख्यत स्वतंत्रता ही खोज रहा है. मनुष्य का विकास स्वतंत्रता के वातावरण में ही संभव है. उनके शब्दों में – "शारीरिक, मानसिक तथा अध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होना तथा दूसरों को उसकी ओर अग्रसर होने में सहायता देना मनुष्य का सबसे बड़ा पुरुस्कार है. जो सामजिक नियम इस स्वतंत्रता के विकास में बाधा डालते हैं, वे हानिकारक हैं, और उन्हें शीघ्र नष्ट करने के लिये प्रयत्न करना चाहिये. उन संस्थाओं को प्रोत्साहन दिया जाये, जिनके द्वारा मनुष्य स्वतंत्रता के मार्ग पर अग्रसर होता है.

विवेकानंद की सबसे प्रमुख देन शक्ति सृजन और निर्भयता का सन्देश थी. वे अत्यंत साहसी, निर्भीक और शक्तिशाली व्यक्ति थे. जब देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और भारतीय जन-मानस हीनता तथा भीरुता से पूर्णत: ग्रस्त था, उस समय विवेकानंद ने अनुभव किया, "सुप्त तथा पददलित भारतीय जनता को शक्ति के अभाव में न तो हम व्यक्तिगत अस्तित्व को स्थिर रख सकते हैं और न ही अपने अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं ." उनके अनुसार "शक्ति ही धर्म है .मेरे धर्म का सार शक्ति है. जो धर्म हृदय में शक्ति का संचार नहीं करता वः मेरी दृष्टि में धर्म नहीं है, शक्ति धर्म से बड़ी वस्तु है और शक्ति से बढ़कर कुछ नहीं" स्वामीजी का कथन था कि प्रत्येक भारतवासी को ज्ञान, चरित्र तथा नैतिकता की शक्तियों का सृजन करना चाहिये. किसी राष्ट्र का निर्माण शक्तियों से होता है, अत: व्यक्तियों को अपने पुरुषार्थ, मानव गरिमा तथा स्वाभिमान आदि श्रेष्ठ गुणों का विकास करना चाहिये.

विवेकानंद ने शक्ति के सृजन के साथ भारतियों को निर्भय रहने का भी सन्देश दिया. उन्होंने निर्भयता के सिद्धांत को दार्शनिक आधार पर उचित ठहराया. उनका मत था कि आत्मा का लक्षण सिंह के समान है, अत: मनुष्य को भी सिंह के समान निर्भय होकर आचरण करना चाहिये. उन्होंने भारतेयों को संबोधित करते हुए कहा — "हे वीर, निर्भीक बनो, साहस धारण करो, इस बात पर गर्व करो कि तुम भारतीय हो और गर्व के साथ घोषणा करो, "मैं भारतीय हूँ व प्रत्येक भारतीय मेरा भी है" उनके यह शब्द सोये हुए भारतवासियों को जगाने के लिये अत्यंत सामयिक और महतवपूर्ण थे. जिस समय देश कि जनता निराशा में डूबी दयनीय जीवन व्यतीत कर रही थी, उस समय शक्ति और निर्भीकता का सन्देश देना उनकी प्रखर बुद्धि का ज्वलंत उदहारण है.

विवेकानंद पश्चिम की अच्छी बातें ग्रहण करने के तो पक्ष में थे, परन्तु पश्चिम की आँख मींचकर नक़ल करने के वे पूर्णतया: विरोधी थे. उनका कथन था भारत को पश्चिम के अंधानुकरण की प्रेरणा देना मूर्खतापूर्ण होगा. उनके शब्दों में–"हमें अपने प्रकृति के स्वभाव के अनुसार विकसित होना चाहिये. विदेशी समाजों की कार्य प्रणालियों को अपनाना व्यर्थ है.

विवेकानंद जी भारतवासियों में एक नवीन उत्साह तथा चेतना का संचार करके राष्ट्रीय जागरण में जो योगदान किया, वह सदा अविस्मरणीय रहेगा. श्री दिनकर के शब्दों में विवेकानंद ने हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति की जो सेवा की उसका मूल्य नहीं चुकाया जा सकता.

संसार के सन्मुख भारतीय संस्कृति और सभ्यता की श्रेष्ठता की सर्वोच्चता का डंका बजने का श्रेय श्री विवेकानंद को ही जाता है अपनी ओजस्वी वाणी के द्वारा सोये हुए हिन्दुओं में स्वाभिमान और आत्मगौरव की भावना का जो संचार किया वह उपेक्षित नहीं किया जा सकता.

www.ignited.in

सन्दर्भ

1. Bhajanānanda (2010), Four Basic Principles of Advaita Vedanta, p.3
2. Michelis 2005.
3. Aspects of the Vedanta, p.150
4. Dutt, Harshavardhan (2005), Immortal Speeches, नई दिल्ली: Unicorn Books, p. 121, ISBN 978-81-7806-093-4
5. क्रान्त (2006). स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास जाँचें URL= मान (मदद). 2. नई दिल्ली: प्रवीण प्रकाशन. पृ॰ 390. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 81-7783-119-4.
6. शुक्ल, पंडित विद्याभास्कर. "स्वामी विवेकानंद का जीवन परिचय".
7. Paul 2003, पृ॰ 5.

Corresponding Author

Dr. Vivek Kumar*

Professor & Head, Swami Vivekananda Chair Central University, Jammu